



# INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

## सफेद मूसली – खेती एवं आर्थिक विकास में योगदान

मधुरानी<sup>1</sup>, डॉ० रीता जयसवाल<sup>2</sup>

शोधार्थी<sup>1</sup>, अर्थशास्त्र विभाग, एम.एल.बी. कॉलेज, भोपाल म.प्र. भारत प्राध्यापक<sup>2</sup>, अर्थशास्त्र विभाग, एम.एल. बी. कॉलेज, भोपाल म.प्र. भारत

### सार

भारत वर्ष के हृदय में बसने वाला मध्यप्रदेश एक हरित प्रदेश है, जहाँ पर दुर्लभ वनौषधियों का विशाल भंडार है साथ ही आदिवासी बाहुल्य प्रदेश भी है। यहाँ की अधिकांश आदिवासी बाहुल्य जनसंख्या वनों के आसपास निवास करती है तथा अपने जीविकोपार्जन के लिए वनों एवं उसके उत्पादों पर निर्भर है। अतः मानव सभ्यता के विकास में औषधियों पौधों की अहम भूमिका है। मध्यप्रदेश देश का सबसे बड़ा वनाच्छादित प्रदेश होने के कारण यहाँ औषधीय वनस्पतियों का समृद्ध संसाधन उपलब्ध है। यहाँ लगभग 2200 प्रजातियों से अधिक औषधीय पौधे उपलब्ध हैं। देश के कुल कृषि जलवायु क्षेत्रों में से 11 कृषि जलवायु मध्यप्रदेश में पाए जाते हैं। हर्बल प्रदेश के वनों में प्रमुख रूप से सफेद मूसली, काली मूसली, चिरायता, कालमेघ, सर्पगन्धा, अश्वगन्धा, सतावर, आदि असंख्य औषधीय पौधे पाए जाते हैं। जिसमें शोध अध्ययन के लिए सफेद मूसली का चयन किया जाता है।

सफेद मूसली जिसका वनस्पतिक नाम *Chlorophytum Borivilinum L.* है। यह औषधीय गुणों से भरपूर है जिसके कारण इसके उत्पादन पर अधिक जोर देने की आवश्यकता है। इस औषधीय के उत्पादन एवं उत्पादकता में वृद्धि करने से देश के कुल आर्थिक विकास में योगदान बढ़ेगा। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में प्रति व्यक्ति वास्तविक आय कम होने के कारण औषधीय खेती एवं अन्य प्राथमिक उद्योगों पर जोर दिया जाना चाहिए। इससे राष्ट्रीय आय में योगदान बढ़ेगा। इस प्रकार अधिकांश अध्ययन क्षेत्र हैं, जिन्हें निरूपित करने के लिए शोध पत्र तैयार किया जा रहा है। जिससे अध्ययन के लिए हर्बल प्रदेश में सूक्ष्म स्तर पर सफेद मूसली के उपज का वाणिज्यिक महत्व, आर्थिक विकास में योगदान देना एवं उत्पादन लागत लाभ का विश्लेषण करना तथा आर्थिक नीतियों का मूल्यांकन करना है। संकेत शब्द – सफेद मूसली, औषधीय पौधे, राष्ट्रीय आय, आर्थिक विकास

### प्रस्तावना –

भारत का हृदय प्रदेश, हमारा मध्यप्रदेश भाँति-भाँति की जड़ी-बुटियों, औषधियों और प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण है। प्रकृति के नजदीक, प्राकृतिक वातावरण में हमारी परम्परागत और प्राकृतिक धरोहरों को अक्षण रूप में समेटने और सहेजने में प्रदेश के वनवासियों का अभूत पूर्व योगदान रहा है। भारत के अन्य प्रदेशों की तुलना में यह प्रदेश अपने कुल भौगोलिक क्षेत्र का 25.15% भू-भाग में वनों एवं औषधीय पौधों के रूप में आरोग्य का अमूल्य वरदान प्रदान किया है प्रकृति प्रदत्त औषधीय जड़ी-बुटियों के विशिष्ट भागों का उपयोग विभिन्न रोगों के उपचारण में मनुष्य आदिकाल से ही करता आ रहा है। इन औषधियों में सफेद मूसली का महत्व बहुत ही अधिक है चाहे वह स्वास्थ्य की दृष्टि से हो या वाणिज्यिक दृष्टि से, या आर्थिक दृष्टि से हो या रोजगार के परिप्रेक्ष्य में हो।

जनसंख्या दृष्टि और बढ़ती माँग के फलस्वरूप औषधीय उत्पाद का उत्पादन एवं व्यापार अनुपात में नहीं हो रहा है। ऐसी औषधियाँ जिनकी माँग निरंतर बढ़ रही है, इनकी बढ़ती हुई माँग को वनों में उपलब्ध औषधियों को पारम्परिक रूप से संग्रहण कर पूर्ण की जा रही है। अर्थात् इनका उत्पादन तुलनात्मक रूप से कम है इस कारण कुछ क्षेत्रों में औषधियों की खेती की जा रही है लेकिन बहुत कम प्रजातियाँ की। अतः

औषधियों के कृषि उत्पादन को बढ़ाने पर जोर दिया जाना चाहिए, जिसके माध्यम रोजगार की सम्भावनाएँ उपलब्ध करके आर्थिक सम्पन्नता प्राप्त किया जा सके।

उद्देश्य – इस संबंध में अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं –

(1) सफेद मूसली की खेती से रोजगार एवं आर्थिक विकास में योगदान का अध्ययन।

(2) सफेद मूसली की खेती के माध्यम से उत्पादन-लागत-लाभ का विश्लेषण करना। इस शोध-पत्र की परिकल्पना यह है कि सफेद मूसली की खेती से

उत्पादन-लागत-लाभ में कमी हो रही है। इसके लिए विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक

आँकड़े लिए गए हैं। साहित्यिक सर्वेक्षण –

(1) डॉ० सुषमा दवे एवं जगदीश चन्द्र तरफदार के अनुसार “सफेद मूसली के कन्दों में उपस्थित फंगस के द्वारा बनाए जाने वाले रासायनिक तत्वों का अध्ययन किया गया है। इस रासायनिक तत्व के कारण सफेद मूसली की उपज एवं वृद्धि के प्रभाव को बताया गया है।”

(2) डॉ० उत्कर्ष घाटे एवं प्रदीप दुबे के अनुसार “मध्यप्रदेश में पाए जाने वाले औषधियों जैसे आंवला, गिलाय, हर्रा, बहेड़ा, आदि के विपणन में होने वाली समस्याओं को बताया है इनके अनुसार “सफेद मूसली की माँग बाजार में नहीं है, जबकि वास्तविकता से परे है।”

(3) रश्मि द्विवेदी के अनुसार “सफेद मूसली जंगलों में पायी जाने वाली महत्वपूर्ण औषधीय है। वनवासी इस औषधीय का अंधाधुन्ध विदोहन करते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप सफेद मूसली की अलग – अलग प्रजातियाँ वर्तमान में विलुप्त होती जा रही है।”

(4) गुलाब सिंह ठाकुर एवं मनोरंजना बाग के अनुसार “सफेद मूसली को सफेद सोना कहा गया है, क्योंकि यह औषधीय गुणों से भरपूर है एवं स्वास्थ्यवर्धक है। यह आयुर्वेद एवं यूनानी में दवाईयों बनाने में उपयोग किया जाता है।” उपरोक्त साहित्य का अध्ययन करने से पता चला कि सफेद मूसली की खेती पर संतोषजनक शोधपत्र प्रस्तुत नहीं किया गया है।

व्याख्या –

सफेद मूसली लिलिएसी कुल का महत्वपूर्ण शाकीय औषधीय पौधा है। यह बहुत ही उपयोगी है, इसकी जड़े बेलनाकार की तथा अधिकतम ऊँचाई 1.5 फीट की होती है। इस औषधीय पौध की कांदिल जड़ें जमीन से 10 इंच तक नीचे जाती हैं। यह कृषि योग्य है एवं कृषिकरण हेतु जो किस्म सर्वाधिक उपयुक्त पायी गई है वह है क्लोरोफायटम बोरिविनिनम। इस किस्म में ऊपर से लेकर नीचे तक की जड़े एक समान होती है। जिसमें दो से लेकर सौ तक की कन्द के गुच्छे पाई जाती है, इसकी कृषि के लिए मूलतः गर्म एवं आर्द्र जलवायु एवं मिट्टी का पी.एच. सामान्यता 6:5 से लेकर 8:5 तक होना चाहिए। सफेद मूसली का उपयोग आयुर्वेदिक औषधीय के रूप में किया जाता है। इसका उपयोग अस्थमा, गठिया, मधुमेह, हृदयरोग, शक्तिवर्धक



आदि के रूप में किया जाता है। आयुर्वेद में सफेद मूसली का उपयोग 100 सफेद मूसली से भी अधिक दवाईयों के निर्माण में किया जाता है। वर्तमान समय में इसकी माँग बढ़ती जा रही है, जो लगभग 35000 टन प्रति वर्ष आंकी गई है किन्तु इसकी उपलब्धता लगभग 15000 टन प्रति वर्ष है। इसकी उत्पादन क्षमता की बात करें तो यदि 4 क्विंटल प्रयुक्त किया जाए तो मूसली की अच्छी फसल होने पर किसान को औसतन 12-14 क्विंटल गीली मूसली प्राप्त होता है, तथा सुखने के बाद 3-4 क्विंटल तक प्राप्त होती है।

सफेद मूसली के अर्थशास्त्र का विश्लेषण – सफेद मूसली को खेती सफलता पूर्वक किया जा सकता है। यह एक ऐसी औषधीय पौध है। जिसकी खेती करने से किसानों को रोजगार मिलेगा एवं आर्थिक विकास होगा। कम लागत लगाकर अधिक मुनाफा देने वाली इस औषधीय फसल ने परम्परागत खेती करने वाले कृषकों को भी अपनी तरफ आकर्षित करने लगा है, क्योंकि इसकी खेती से प्राप्त होने वाली शुद्ध आय दूसरे फसलों की तुलना में अधिक है। सफेद मूसली का अर्थशास्त्र ज्ञात करने के लिए भूमि की प्रति हेक्टेयर व्यय (रोपड़ सामग्री + भूमि की तैयारी + बुआई + कटाई + सुखाई + अन्य खर्च) को प्राप्त सकल उत्पादन व्यय से घटाकर प्रति हेक्टेयर शुद्ध आय प्राप्त कर सकते हैं। अर्थशास्त्र चर में, सफेद मूसली की खेती में बुआई की प्रणाली, जलवायु परिस्थितियाँ और बाजार दरों पर भी निर्भर करता है। तालिका क्रं. 1

## सफेद मूसली के कृषिकरण का विवरण

फसल का नाम	क्षेत्र	कृषिकरण पर होने वाले व्यय की मदें	कृषिकरण पर खर्च की राशि (रु.)
सफेद मूसली	एक हेक्टेयर	खेत की तैयारी	12,000.00
		खाद एवं उर्वरक का उपयोग (लगभग 12 ट्रालिया/900 प्रति ट्राली)	10,800.00
		रोपाई के लिए कन्द (लगभग एक टन/350 रु. प्रति किलोकंद)	3,50,000.00
		बोवाई की लागत	8,200.00
		सिंचाई की लागत	8,200.00
		निराई एवं कीटनाशक की लागत	8,000.00
		फसल उखाड़ने की लागत	18,000.00
		मसली को छीलने की लागत	60,000.00
		पैकिंग की लागत	5,000.00
		परिवहन एवं अन्य खर्च	30,000.00
		कुल उत्पादन की कुल लागत (व्यय)	5,10,000.00

स्त्रोत – प्राथमिक स्त्रोत

प्रति हेक्टेयर कुल उत्पादन = 1,000 कि.ग्रा. सूखी जड़ें x 1,000 रु. प्रति कि.ग्रा.

(आय) = 1,000 x 1,000 = 10,00,000 / – रु

प्रति हेक्टेयर कुल उत्पादन लागत = 5,10,000 / – रु.

शुद्ध लाभ = 10,00,000 – 5,10,000

= 4,90,000 / – रु.

लागत– लाभ–अनुपात = 10,00,000 / 5,10,000 = 1.96 : 1 तालिका क्रं. 2

सफेद मूसली की खेती का अर्थशास्त्र (प्रति हेक्टेयर)

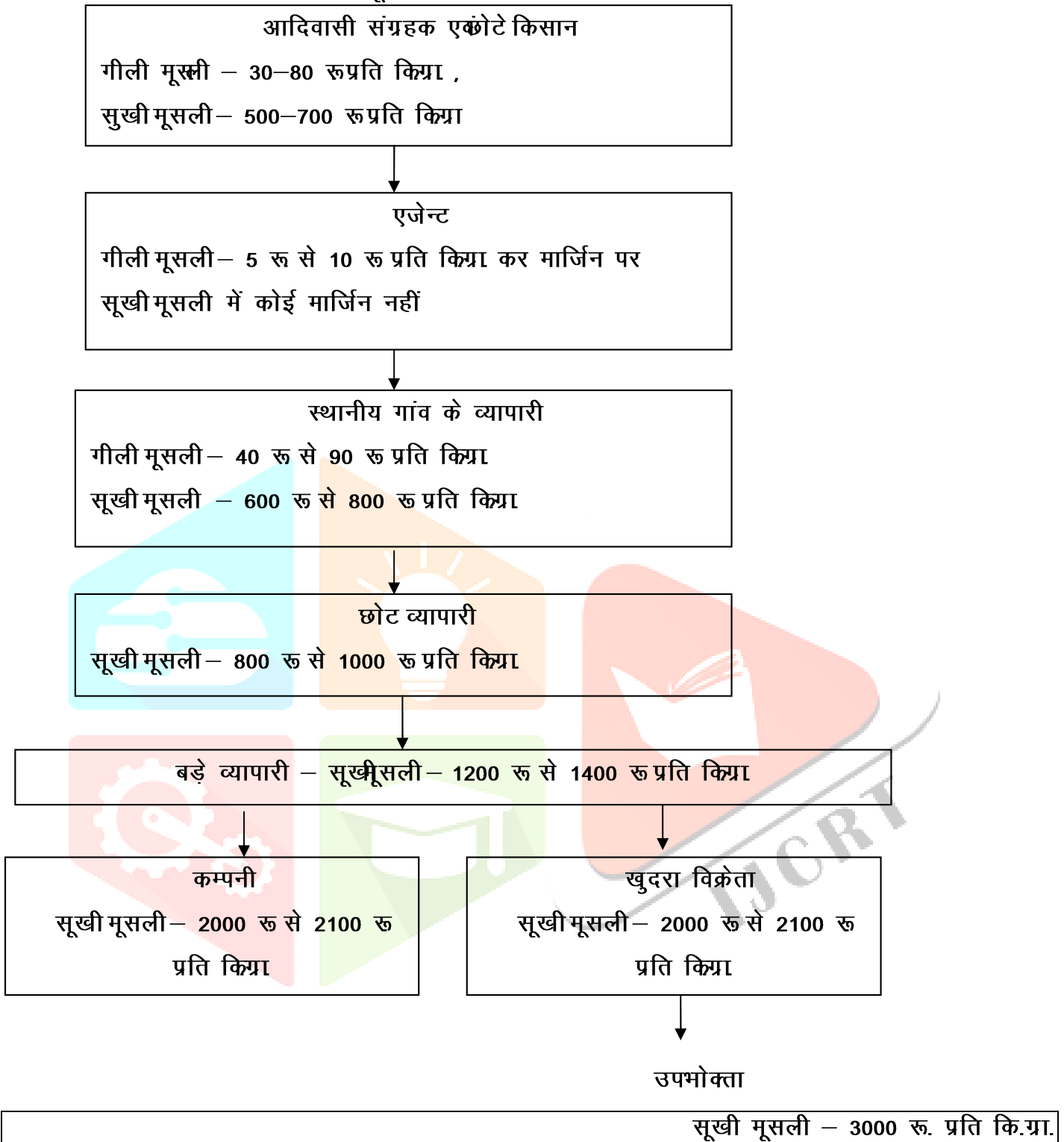
फसल का नाम	उत्पादन की कुल लागत (रु. में)	सकल मौद्रिक आय (रु. में)	शुद्ध लाभ (रु. में)	लागत–लाभ अनुपात
सफेद मूसली	5,10,000 / –	10,00,000 / –	4,90,000 / –	1.96:1

स्त्रोत – प्राथमिक स्त्रोत

एक हेक्टेयर क्षेत्र में अनुमानतः 5,10,000 से 5,20,000 रु. लागत पर 10,00,000 से 10,50,000 रु. तक का लाभ प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार सफेद मूसली की कृषि हेतु न्यूनतम लागत पर अधिकतम लाभ प्राप्त करके किसानों का आर्थिक विकास किया जा सकता है। अतः किए गए शोध में यह निकलकर सामने आया है कि सफेद मूसली की खेती में कम लागत लगाकर अधिक लाभ कमाया जा सकता है। इस फसल से प्राप्त होने वाला लाभ लगभग लागत का दोगुना है। इस प्रकार की खेती के लिए किसानों को प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे उन्हें आय एवं रोजगार दोनों उपलब्ध होगा। वर्तमान में यदि हम सफेद मूसली के विपणन एवं व्यापार के माध्यम की ओर देखें तो पाएंगे कि

इसके विपणन एवं वाणिज्यिक व्यवस्था में कई कमियाँ नजर आएगी।

सफेद मूसली के विपणन एवं व्यापार का माध्यम



समस्या –

वनग्रामों में निवासरत लोगों की जीविकोपार्जन का प्रमुख साधन वनोत्पाद होते हैं। ये लोग वनौषधियों (सफेद मूसली) का संग्रहण एवं खेती करके नजदीकी व्यापारियों को कम मूल्य पर बेचने को मजबूर हैं। इनकी कृषि भी की जा रही है लेकिन समस्या वाणिज्यिक, व्यापार एवं विपणन की होती है। इसमें संगठित बाजारों का अभाव, मूल्यों की पर्याप्त जानकारी न मिल पाना एवं माँग की अनिश्चितता होने से विपणन में लोगों को परेशानी उठानी पड़ती है।

सुझाव –

किसानों एवं वनग्रामवासियों को सफेद मूसली की खेती एवं व्यवसाय के सन्दर्भ में प्रशिक्षित करना चाहिए जिससे औषधीय प्रजातियों का संरक्षण, संवर्धन एवं वैज्ञानिक पद्धति से खेती कर सकें। ऐसे में शासन को एक सुसंगठित बाजार की उपलब्धता, उनकी फसलों के लिए प्रचलित बाजार दर को ध्यान में रखते हुए न्यूनतम समर्थन मूल्य का निर्धारण करना चाहिए जिससे किसानों एवं संग्रहकों को उनके अपने उपज का उचित मूल्य मिल सके जिससे उनका आर्थिक विकास हो, रोजगार के व्यापक अवसर मिले, ताकि देश का आर्थिक विकास सतत होता रहे। निष्कर्ष – उपरोक्त समस्याओं का समाधान एवं सुझाव को मूर्तरूप देने से निश्चित ही सफेद मूसली की खेती का विकास, संरक्षण एवं संवर्धन किया जा सकेगा और राष्ट्र में स्वस्थ जीवन आर्थिक सम्पन्नता, विदेशी मुद्रा का अर्जन, सफल उद्यमी के रूप में उभरना, समृद्धि के साथ एक अच्छे पर्यावरण का निर्माण तथा रोजगार एवं श्रम-सृजन का नया आयाम स्थापित होगा।

❖ तालिका क्रमांक 1 – सफेद मूसली के कृषिकरण का विवरण ❖ तालिका क्रमांक 2 – सफेद मूसली की खेती का अर्थशास्त्र

सन्दर्भ ग्रंथ सूची –

- म0प्र0 राज्य लघु वनोपज (व्यापार एवं विकास) सहकारी संघ मर्यादित भोपाल
- विन्ध हर्बल एम.एफ.पी. बरखेड़ा पठानी भोपाल ➤ जैविक खेती मार्गदर्शिक, पत्रिका
- बेससाईट – [www.mfpferation.com](http://www.mfpferation.com)
- [www.nmpbnc.in.india](http://www.nmpbnc.in.india)

